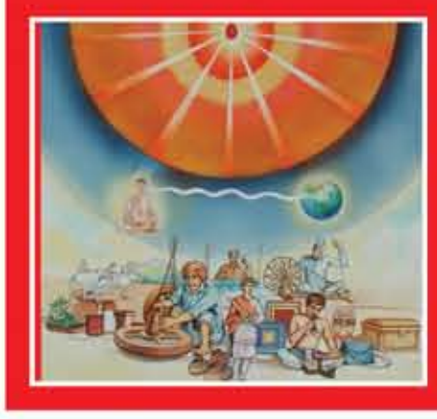

शिव आमंत्रण

RAJHIN 16601/20/1/2013-TC

वर्ष: 01 , अंक: 05 | शाश्वत यौगिक खेती पर विशेष | RAJHIN 16601/20/1/2013-TC | हिन्दी (मासिक), 1 अक्टूबर 2013, सिरोही, पृष्ठ: 4, मूल्य: 5 रुपए

राजयोग से सब कार्य संभव... राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी ....पेज 2

परमात्मा ने की फसल की रक्षा ....पेज 2

... और फसल हो गई हरी-भरी ....पेज 3

राजयोग से सहज ही सब मिल जाता ....पेज 3

यौगिक खेती का आधार 'राजयोग' ..पेज 4

गांव का विकास करना सभी का धर्म ..पेज 4

संकल्पों का बहुत महत्व

बाबा ने सदा हमें यही शिक्षा दिया है कि हमारे संकल्पों का बहुत महत्व है। हमारे जैसे संकल्प होंगे वैसी ही सृष्टि होगी। हमारे एक-एक संकल्पों का प्रभाव प्रकृति पर और उसके पांचों तत्वों पर पड़ता है। विश्व नाटक के प्रारम्भिक स्वर्णिम काल में हर मानव सर्वगुण संपन्न, सोलह कला सम्पूर्ण दिव्य स्वरूप में था। वहां सम्पूर्ण स्वास्थ्य, समृद्धि, अपार सुख-शांति तथा दिव्य-संस्कृति पर आधारित जीवन-शैली थी। इसका मूल रहस्य यह भी था कि उस समय की सात्विक कृषि से स्वादिष्ट, शुद्ध और पौष्टिक अन्न, फल-फूल, सब्जियां आदि सहज रूप से प्राप्त हो जाती थी। उस समय मानव का मन सात्विक और शुद्ध होता था जिसके प्रकम्पन प्रकृति ग्रहण करती थी। जिसके कारण उत्पादित फल एवं सब्जियों में भी उन संकल्पों का प्रभाव पाया जाता था।

राजयोगिनी दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

शाश्वत यौगिक खेती क्यों जरूरी हैं?

आज रासायनिक खाद, बीज, फर्टिलाइजर, पेस्टीसाइड, कीटनाशकों के उपयोग से फसल की पैदावार तो बढ़ी है वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हम जो अनाज, दाल, सब्जी, फल आदि खा रहे हैं उसमें से पौष्टिकता गायब हो चुकी है। स्वादिस्ट पौष्टिक, शुद्ध, सात्विकता के अभाव में मनुष्य का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। सम्पूर्ण तन-मन के स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक तथा संतुलित भोजन का होना जरूरी है। आदिकाल में मनुष्य निरोगी काया, दीर्घायु प्राप्त करते थे। अत: हमें पौष्टिक एवं सात्विक अन्न प्राप्त हो सके इसके लिए जैविक और यौगिक खेती एक कारगर कदम सिद्ध होगी। क्योंकि जब हम श्रेष्ठ व सकारात्मक बायब्रेशन से उत्पन्न अन्न ग्रहण करेंगे तो हमारे विचार भी श्रेष्ठ और सकारात्मक होंगे।

शाश्वत यौगिक खेती | प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का एक नया प्रयोग

नए 'युग' के लिए नई 'खेती'

'शाश्वत यौगिक खेती' एक ऐसी पद्धति है जिसमें हम राजयोग का प्रयोग करते हुए परमात्मा से शक्ति लेकर फसल को योग के प्रकम्पन द्वारा सकारात्मक ऊर्जा देते हैं। इसके साथ ही जैविक खाद का भी प्रयोग किया जाता है। इससे उत्पन्न उपज पौष्टिक और शक्तिशाली होती हैं।

1996 ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना

700 से अधिक किसान भाई कर रहे खेती

2007 से यौगिक खेती के प्रोजेक्ट पर काम शुरू

100 से अधिक किसान महासम्मेलनों का आयोजन

138 देशों में ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र

16 सूत्रीय एजेंडा गांवों के सम्पूर्ण विकास के लिए

प्राचीन काल से ही कहा जाता है कि अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है और मन का स्वास्थ्य और रोगों से गहरा संबंध है। कहते हैं जैसा अन्न, वैसा मन और जैसा मन वैसा तन। सभी मनुष्यों का लक्ष्य यही है कि हम निरोगी रहें, शांत, शीतल, और सात्विक वृत्ति को धारण कर सुखमय और आनंदित जीवन जिएं। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पौष्टिक और सात्विक अन्न का सेवन करना बहुत जरूरी है।

इस सृष्टि रंगमंच पर एक समय ऐसा था जब मानव निरोगी तथा दैवी गुणों से सम्पन्न था, उस समय भारत को सोने की चिड़िया , स्वर्ग भूमि के नाम से आज भी याद करते है। परंतु कालचक्र घूमते हुए स्वर्णिम सतयुगी दुनिया के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग आया। वर्तमान समय सृष्टि का तमोप्रधान स्वरूप विकट परिस्थितियां लेकर खड़ा है। धरती पर उपलब्ध सभी पदार्थ दूषित, दु:खदायी तथा विषैले हो रहे हैं और इसका मुख्य कारण मानव मन का विषैला होना है। प्रकृति मानव की अनुगामिनी है।

कम खर्च में अच्छी फसल हो रही प्राप्त

प्रकृति को सतोप्रधान बनाने तथा मानव मात्र के तन-मन को सुख शांतिमय, निरोगी एवं तनावमुक्त बनाने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा उसकी सहयोगी संस्था राजयोग एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा भारत के किसान भाई-बहनों को शाश्वत यौगिक खेती के विषय में जागृत किया जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप कम खर्च में अच्छी फसल प्राप्त हो रही है। यह नए युग के लिए नया कदम है।

यह एक अनोखा विज्ञान है और हमारी प्राचीन पद्धति है। शाश्वत यौगिक खेती के लिए हमें कुदरत के नियम एवं प्रभाव पर चलकर प्रगत विज्ञान के आधार से निसर्ग एवं प्रकृति के पांचों तत्वों सहित सर्व जीव-जंतुओं, पशु-पक्षियों से स्नेह का रिश्ता जोड़ना है। इसके लिए आवश्यकता है आध्यात्मिक शक्तियों की, जो हमें राजयोग से मिलती है। राजयोग के अभ्यास में हम सर्वप्रथम आत्मा के मूल गुणों को पहचानते हैं और उसमें स्थित होते हैं। फिर प्रकृति के पांचों तत्वों को, ग्रहों को, तारों को वा जीव-जंतुओं को परमात्मा की शक्ति के प्रकम्पन देकर यौगिक खेती पद्धति में इनका सहयोग लेते हैं। जिनके सहयोग से वनस्पतियां बढ़ती हैं तथा अच्छा उत्पादन मिलता है।

परमपिता परमात्मा से जोड़ते है संबंध

राजयोग के अभ्यास में हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करके परमात्मा पिता से अपना संबंध स्थापित करते हैं। उनकी शक्तियों से स्वयं को भरपूर करते हैं फिर प्रकृति के तत्वों से मन ही मन बातें करते हैं, उन्हें आदर पूर्वक आह्वान करके, सृष्टि के संतुलन को बनाए रखने के लिए उनका सहयोग मांगते हैं। फिर जमीन को आवश्यकता प्रमाण जैविक खाद देकर धरती मां को शक्तिशाली बनाते हैं।

वनस्पति को देते स्नेह की किरणें

फसल बुवाई के बाद बीच-बीच में खेत की परिक्रमा करते हुए वनस्पति को स्नेह की किरणें देकर उसकी पालना करते हैं। समय-समय पर पानी तथा आवश्यकता प्रमाण अमृतपानी वा जीवामृत भी डालते हैं। अगर कारण-अकारण फसल पर किसी भी प्रकार का रोग आ जाता है तो धैर्यवत संकल्पों के साथ योग का प्रयोग कर, और आवश्यकता अनुसार जैविक साधनों द्वारा उस फसल को निरोगी बनाते हैं। वर्तमान में भारत में करीब 700 किसान अपनी खेती पर योग के प्रयोग कर रहे हैं और वे कम खर्चे में बहुत अच्छी फसल ले रहे है। जो किसान पहले महंगी-महंगी खादें और दवाईयां डालने पर भी इतने अन्न का उत्पादन नहीं कर पाते थे वह बहुत कम मेहनत और कम खर्चे में उससे अच्छी फसल ले रहे हैं। उनके सात्विक निव्यर्सनी जीवन का, उनके सकारात्मक चिंतन का और परमात्म शक्तियों का प्रभाव प्रकृति बहुत सहज स्वीकार कर उन्हें पौष्टिक सात्विक अन्न, फल और सब्जियां प्रदान कर रही है।

नोट: यौगिक खेती में कोई भी रासायनिक खाद व कीटनाशक का प्रयोग नहीं करते हैं।

ब्रह्माकुमार भाई-बहनें शाश्वत यौगिक खेती के तहत खेत में बैठकर फसल को राजयोग द्वारा शुभ व सकारात्मक बायब्रेशन देते हुए।

वनस्पति पर भी पड़ता हैं भावनाओं का प्रभाव

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने अपने प्रयोग से किया सिद्ध

मनुष्यात्मा जो भी विचार या भावना उत्पन्न करती है उसका सीधा प्रभाव पेड़-पौधों और वातावरण पर पड़ता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बोस ने यह सिद्ध करके दिखाया है कि मनुष्यों जैसे ही पेड़-पौधे भी हमारी संवेदनाओं को महसूस करते हैं। उन्होंने वनस्पति के अंदर के हलचल को रिकार्ड करने की एक मशीन तैयार की जिसके आधार से उन्होंने यह सिद्ध करके दिखाया है कि कैसे मन की भावनाओं का वनस्पतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारे मन में विचार करने की शक्ति होती है। हर विचार में विशेष ऊर्जा होती है। सकारात्मक विचारों में सकारात्मक ऊर्जा तथा नकारात्मक विचारों में नकारात्मक ऊर्जा होती है। जिस प्रकार किसी शांत सरोवर के जल में एक पत्थर फेंकते हैं तो जिस स्थान पर पत्थर गिरता है तो उस स्थान से जल तरंगे उठती हुई एक वृत्त के आकार में समग्र सरोवर में फैलती जाती है। ऐसे ही जब हमारा मन कोई विचार उत्पन्न करता है तो उसके विचारों से निकली हुई तरंगे अथवा बायब्रेशन एक वृत्त के आकार में मन के चारों ओर फैलते जाती है, जो पर्यावरण और फसल को प्रभावित करती है।

जगदीशचंद्र बोस

जहां सकारात्मक विचारों से सकारात्मक वायुमंडल बनता है, वहीं नकारात्मक विचारों से नकारात्मक वायुमंडल बनता है। सकारात्मक विचारों का शक्तिहीन धरती और फसल पर एक जादू जैसा चमत्कारिक असर होता है।

तीन दिन बीज संस्कार जरूरी

बीज को बोने के पूर्व बीज संस्कार करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।

जमीन में बोने वाले बीज को मेडीटेशन कक्ष में रखकर पहले तीन दिन या सात दिन तक ब्रह्ममुहूर्त के समय प्रात: 4 बजे आधा घंटा योग अभ्यास द्वारा अपनी सकारात्मक ऊर्जा एवं परमात्म शक्तियों से उस बीज को चार्ज करते हैं, जिसे हम बीज संस्कार कहते है। फिर परमात्मा की याद में बीज बोते हैं और खेत में परमात्मा शिव का ध्वज फहराते हैं ताकि वहां आने जाने वालों को परमात्मा पिता की याद आती रहे और उनकी सकाश पूरी फसल पर फैलती रहे।

यौगिक खेती से बदले जिंदगी के आयाम

बचपन से थी कुछ अलग करने की तमन्ना, कृषि क्षेत्र में सराहनीय कार्य पर महाराष्ट्र सरकार ने तुलसी के पिताजी को उद्यान पण्डित पुरस्कार से किया सम्मानित

महाराष्ट्र. कहते है शब्दों की ताकत तलवार से भी ज्यादा तेज होती है। कुछ ऐसा ही हुआ तुलसीभाई के साथ। सन् 1993 की एक रात ने तुलसीभाई की जिंदगी बदल कर रख दी। योग के प्रयोग से खेती कर सन् 2003 में राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी में आपके द्वारा उगाई अनार की दो प्रजाति को पहला और तीसरा स्थान मिला। खेती में नए प्रयोग और सराहनीय कार्य के लिए महाराष्ट्र सरकार ने आपके पिताजी को उद्यान पंडित पुरस्कार से नवाजा। आइए जानते है कैसे तुलसीभाई ने यौगिक खेती कर फसल उत्पादन में नए कीर्तिमान बनाए और अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें।

'यौगिक खेती' में किए नए प्रयोग

तुलसीभाई बताते है कि मुझे खेती करने का बचपन से ही शौक था। मैंने जब से खेती शुरू की है तब से खेती में नित नए प्रयोग करता आ रहा हूं। मैं हमेशा कृषि साहित्य पढ़कर खेती में नए-नए प्रयोग किया करता था। खेती से संबंधित जब भी कोई नई उन्नत किस्म का बीज, जैविक खाद या कोई नए प्रयोग की जानकारी मिलती तो मैं जरूर करता।

सन् 1993 की बात है मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे एक किताब पढ़ रहा था, जिसमें रासायनिक खेती के दुष्परिणामों को पढ़कर मेरी आंखों से आंसू बहने लगे और मैं रातभर सो नहीं पाया, क्योंकि मैंने दुनिया को रासायनिक अन्न खिलाकर तो सबकी बद्दुआएं ली। तब से मैंने निश्चय किया आज से सिर्फ यौगिक खेती ही करेंगे। इसका मैंने गहराई से अध्ययन किया।

अनार की टहनियों पर लगे फल। इनसेट: तुलसीभाई।

मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ग्राम विकास प्रभाग के संपर्क में आया। यहां मुझे मालूम हुआ कि ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग ने खेती में योग का प्रयोग कर किसान भाईयों के लिए एक नई कृषि पद्धति का विकास किया है। जिसे नाम दिया 'शाश्वत यौगिक खेती'। इस पद्धति से खेती कर आज अनेक किसान भाईयों की जिंदगी में फिर से खुशहाली आई है। अनेक किसानों की जिंदगी बदल गई। सैकड़ों किसानों ने खेती में योग का प्रयोग कर अच्छी पैदावार की साथ ही लागत भी कम आई।

उन्होंने बताया कि यौगिक खेती से फसल उत्पादन पर सन् 2003 की राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी में हमारे अनार की दो प्रजाति को पहला और तीसरा स्थान मिला। बेर, बैंगन, ज्वार, करेला, टमाटर, अरहर, खीरा, खरबूजा और तरबूज में हमें पहला स्थान मिला। जिसके लिए महाराष्ट्र सरकार के कृषि विभाग ने हमारे पिताजी को उद्यान पण्डित पुरस्कार से सम्मानित किया। आज यौगिक खेती पद्धति से प्रेरित होकर अनेक किसान खेती कर रहे है और सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे है।

2007 से माउण्ट आबू में की खेती

2007 में मैंने माउण्ट आबू आकर तपोवन में खरबूजे बोये और इसमें शाश्वत् यौगिक खेती का प्रयोग किया। जिसके परिणाम और अनुभव आश्चर्यचकित करने वाले मिले। इसमें किसी भी रासायनिक खाद एवं कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया था। खेत में जीवाणु बढ़ाने के लिए गोबर की खाद, नीम की खली, अमृतपाणी, जीवामृत, दूध, गुड़, गोमूत्र, सप्तधान्य अर्क आदि का प्रयोग किया। हमारा संबंध परमात्मा से होने के कारण हमें ऋतु में कैसा परिवर्तन होने वाला है या कौन से वायरस आदि आने वाले हैं यह पहले ही टच हो जाता है और हम उनसे बचाव कर लेते हैं। हरेक फसल पर हम ऐसा ही योगाभ्यास अमृतवेले करते हैं। ऐसा करने से हमें अपेक्षा से भी ज्यादा सफलता मिली है और हमारा विश्वास दृढ़ हुआ है कि फसलों पर मन के शुद्ध, पवित्र संकल्पों-विचारों का सकारात्मक प्रभाव होता है इससे फसल अधिक उत्पादन देती है।

फसल को सुनाते थे ईश्वरीय संगीत

तुलसीभाई बताते है कि वह फसल पर योग के दौरान टेप द्वारा ईश्वरीय गीत सुनाते थे। साथ ही खेत में बैठकर परमात्मा शिव से शक्ति लेकर फसल को शुभ बायब्रेशन देते और शुभ संकल्पों से फसल को शांति के प्रकम्पन देते थे।

बीटेक के बाद अपनाई यौगिक खेती की राह

हरियाणा के जयवीर आर्य युवाओं के लिए बने मिसाल

रानीला (हरियाणा). आज जहां ऊंची पढ़ाई पढ़ने के बाद युवा मोटी सैलरी के लिए अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों की ओर रूख करते हैं। वहीं रानीला हरियाणा के जयवीर आर्य उन युवाओं में से है जिन्होंने बीटेक की पढ़ाई पूर्ण कर पैतृक व्यवसाय को अपनाया और खेती करने का निश्चय किया।

जयवीर बताते है मेरे पिताजी पहले रासायनिक खेती करते थे। जिसमें वे खाद और कीटनाशकों का इस्तेमाल करते थे। जिसके लिए उन्होंने बैंक से काफी लोन भी लिया था और बाहर का भी बहुत कर्ज लिया। जिससे वे हमेशा चिंतित रहते। फसल से इतनी आमदनी नहीं होती थी कि वे सभी का कर्जा चुका पाते। इसी दौरान मैं ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग के सम्पर्क में आया। जहां मुझे शाश्वत् यौगिक जैविक खेती करने की प्रेरणा मिली। मैंने वापस आकर अपने खेत पर इसका प्रयोग किया और रासायनिक खाद की जगह मैंने जैविक खाद का प्रयोग किया और अपनी फसल को मैं योग के द्वारा सकारात्मक संकल्प देता था। इसका परिणाम मुझे जल्द ही मिल गया। मुझे पहले की जगह ज्यादा उत्पादन प्राप्त हुआ और फसल का भी उचित मूल्य मिल गया। हमारे खेत में उत्पादित सब्जियों की मांग बाजार में सदा रहती थी।

... और चुका लिया कर्जा

जयवीर आर्य

इस तरह हमने बैंक और अन्य लोगों का भी कर्जा जल्द ही चुका दिया। सचमुच में यह खेती बहुत ही कमाल की है जो कम खर्च में ज्यादा उत्पादन देती है। इसलिए हम सभी किसानों को आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए यह खेती जरूर करनी चाहिए।

संपादकीय

बीके करुणा

शाश्वत यौगिक खेती नए युग की परिकल्पना

भारत देश गांवों का देश है। यहां भारत की अधिकतर आबादी गांवों में बसती है जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन है। यह माना जाता है कि यदि भारत के शहरों के साथ गांवों की स्थिति सुदृढ़ होगी, तभी देश विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा होगा। इस विकास का अर्थ केवल यह नहीं कि हम धनधान्य से भरपूर हो जाए। बल्कि इसका उपभोग करने वाला व्यक्ति खुशहाल, सुखी और निरोगी हो तब कहेंगे सम्पूर्ण सुख और सम्पूर्ण विकास। निःसंदेह हमने विकास की सीढ़िया पीछे के कुछ वर्षो में तेजी से चढ़ी है। जिसका नतीजा आज हमारे सामने है कि हम विकास की ओर बढ़ रहे है। परन्तु इस विकास की रेस में एक परछाई हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है।

शारीरिक एवं मानसिक बुराईयां का तेजी से बढ़ना, साथ ही प्रतिदिन जन्म लेने वाली नई-नई बीमारियां। ये एक जिन्न की भांति हमसे चिपकती जा रही है। इसका कारण क्या हो सकता है इस पर हम सभी को विचार करने की जरूरत है। बदलता हुआ पर्यावरण, हमारी बदलती हुई जीवन शैली का ही परिणाम है कि हम प्रतिदिन नई-नई बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। वैज्ञानिकों की माने तो कृषि में उपयोग होने वाली रासायनिक खाद तथा कीटनाशक दवाओं के प्रयोग, मीठे जहर की भांति हमारे शरीर को छलनी कर रहे हैं। जिसके कारण उपभोग करने के बाद जितना सुख मिलना चाहिए उससे कई गुणा दुखः मिल रहा है।

परमात्मा इस दुनिया में जब आता है तो वह अपने बच्चों यानि सर्वमनुष्यात्माओं को हर तरह से सुख देना चाहता है। उसके लिए केवल उसे धन ही नहीं देता वरन, गुण, मूल्य, शांति, आनन्द और प्रेम भी देता है। इसके साथ जिस माहौल एवं परिवेश में मनुष्य निवास करता है उसे भी वह सकारात्मक और शक्तिशाली बनाने की सलाह देता है। वहीं प्रकृति को सतोप्रधान बनाने के लिए प्रतिदिन प्रकृति को भी ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग ध्यान से प्रकम्पन देने की विधा बताई है। ताकि ईश्वरीय शक्ति से निकले प्रकम्पन पूरे प्रकृति को भी पावन बना सके। ऐसे ही कृषि से ही मनुष्य को अनाज मिलता है और वह उसे खाकर जिन्दा रहता है।

इसलिए अनाज को उगाने से लेकर उसके विभिन्न क्रियाओं में ईश्वरीय शक्ति को समाहित करने की शिक्षा देता है। ताकि अनाज को भी शुद्ध और सात्विक बनाया जा सके। अब तो इसके परिणाम भी बहुत तेजी से मिलने लगे है। संस्थान का ग्राम विकास प्रभाग भारत के कई अनुसंधान केन्द्रों के साथ मिलकर इस मुहिम को आगे बढ़ा रहा है। जिसमें वैज्ञानिक भी सहभागी है। हमें पूरा विश्वास है कि एक दिन जरूर भारत यौगिक खेती करेगा और उत्पन्न होने वाले अनाज लोगों को सम्पूर्ण सुख और स्वास्थ्य देंगे।

यौगिक खेती से सर्वांगीण स्वास्थ्य

मेरी कलम से

डॉ. सुनीता टी पाण्डेय

लेखकः गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय पंतनगर में शस्य विज्ञान की प्रोफेसर है।

Email: pp@gmail.com

कृषि एवं किसान का जीवन आज पुनः एक चौराहे पर है जहां उसे कौन सा रास्ता चुनना है यह उसके लिए एक चुनौती भरा प्रश्न है। अतः कृषि वैज्ञानिकों, योजनाकारों एवं नीति निर्माताओं को पुनः एकजुट होकर इस चुनौती को चुनौती देनी ही होगी, चौराहे पर खड़े कृषक को सही रास्ता सुझाना ही होगा, तभी देश में खुशहाली संभव है।

भारत वर्ष की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित उद्योग ही थे, हैं और रहेगें। किसी भी मुल्क का साहित्य वहां के सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का दर्पण होता है। इस दर्पण में यदि हम झांके तो स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि हमारे देश की उन्नत कृषि के चलते साहित्य में गायन है कि मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती, जो कि द्योतक है देश की उर्वर मृदाओं की। जहां डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा द्योतक है हमारे देश की सम्पन्नता का एवं सुजलाम् सुफलाम् मलयज् शीतलाम्- हमारे देश के पांचों तत्वों की पवित्रता की सूचक है।

इन्ही सब वास्तविकताओं के चलते घाघ ने सर्वथा सत्य को उजागर किया है कि उत्तम खेती मध्यम धान परन्तु खेद है कि हमारा अन्नदाता किसान वर्तमान में किसानी छोड़ने को मजबूर है, वो आत्मदाह कर रहा है गण के बोझ के तले वह सिसक रहा है।

परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम है। आज हमारे देश की सम्पन्नता उर्वर मृदाएं, पांचों पवित्र तत्व सब एक स्वप्न प्रतीत हो रहे हैं। कालचक्र के चलते पहिए में सब दफन हो गए। सन् 1950 तक आते-आते हमारा देश अन्न के लिए कटोरा लेकर दूसरे देशों के समक्ष गुहार कर रहा था। हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था शिप टू माउस हो गई यानि जब दूसरे मुल्कों से जहाजों से अन्न आएगा तब हमारे देश के घरों में चूल्हा जलेगा।

ऐसी विषम परिस्थितियों में हमारे कृषि वैज्ञानिकों, योजनाकारों एवं नीतिविदों के संयुक्त प्रयासों से देश में हरित क्रान्ति का उद्‌गम हुआ और हम खाद्यान्नों की उपलब्धता में आत्मनिर्भर हुए। इस सार्थक प्रयास के लिए कृषि वैज्ञानिकों, योजनाकारों एवं नीति निर्माताओं के प्रति प्रत्येक भारतवासी आभारी रहेगा। समय की निरन्तरता के चलते धीरे-धीरे बाह्य निवेशों के पोषण पर आधारित हरित क्रान्ति, वर्तमान परिपेक्ष्य में टिकाऊ नहीं रह पायी है तथा एक बार हमारी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को उन्नत रखने के लिए पुनः दूसरी हरित क्रांति की आवश्यकता है। कृषि की विधा में सम्पूर्ण आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। ताकि हमारा किसानी छोड़ता जा रहा किसान पुनः किसानी की ओर रूख कर सके एवं पुनः खुशहाल अन्नदाता का दर्जा प्राप्त कर सके।

शाश्वत यौगिक खेती पद्धति से उगाई गई फसल लहलहाते हुए।

हमें उपाय खोजने है हमारी बंजर होती जा रही जमीनों को उनकी उर्वरता वापस दिलाने के, लगातार नीचे गिरते जा रहे जल स्तर को रोकने के, कम होती गुणात्मक उत्पादकता को बढ़ाने के लिए, प्रदूषित होते जल स्त्रोत कम होते जंगलों, तथा घटती हुई जैवविविधता से उबरने के लिए। कृषि एवं किसान का जीवन आज पुनः एक चौराहे पर है जहां उसे कौन सा रास्ता चुनना है यह उसके लिए एक चुनौती भरा प्रश्न है। चौराहे पर खड़े कृषक को सही रास्ता सुझाना ही होगा तभी भारतवर्ष में खुशहाली संभव है।

इसी क्रम में कृषि की तमाम विधाओं में जैविक खेती एक विकल्प है। जैविक खेती आधार का है जियो और जीने दो, प्रकृति की तमाम रचनाओं का कोई न कोई प्रयोजन है। उन्हें संतुलित जैव विविधता को सुरक्षित रख अधिक से अधिक अन्न उपजाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए जैविक खेती के साथ शाश्वत यौगिक खेती के प्रयोग विभिन्न प्रदेश के कृषकों का एक रोचक अनुभव साबित हुआ है। वर्तमान में शाश्वत यौगिक खेती का प्रयोग गुजरात, महाराष्ट्र, के कृषक सफलतापूर्वक कर रहे हैं। किसानों के अनुभवों का वैज्ञानिक आधार सत्यापित करने के लिए गुजरात में दांतीवाड़ा स्थित कृषि विश्व विद्यालय में पांच वर्षो के प्रयोगों के आधार पर उत्साहवर्धक परिणाम सामने आए हैं। करनाल में भी वैज्ञानिक प्रयोग में उत्साहवर्धक परिणाम मिले, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर में शोध विद्यार्थियों द्वारा एक वर्ष में किए गए प्रयोगों में सार्थक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

महाराष्ट्र के कृषि विश्व विद्यालय में भी शाश्वत यौगिक खेती के सार्थक परिणाम प्राप्त हुए हैं। आवश्यकता है यौगिक खेती एवं इसकी विधा को कृषकों, कृषि वैज्ञानिकों, योजनाकारों एवं नीति निर्माताओं के मध्य अंगीकार करवाने के लिए आवश्यक प्रयास कर इसके परिणामों को जन-जन तक पहुंचाने की ताकि भारतवर्ष के कृषकों एवं कृषि दोनों का पुनः जीर्णोद्धार हो सके।

राजयोग से सब कार्य संभव

राजयोग मेडिटेशन में वह शक्ति होती है जो असंभव कार्य को भी संभव बना देती है। यह हमारा भाग्य है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा परमधाम से आकर हम बच्चों को सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। हमारे विचारों का प्रकृति, पेड़-पौधों सहित सारे वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। संकल्प शक्ति दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। हम आज जो है भी है हमारे विचारों के कारण ही है। हमारी संकल्प शक्ति से ही कोई कार्य छोटा या बड़ा महसूस होता है। राजयोग के अभ्यास से हमें सीधे परमात्मा से शक्ति मिलती है। यौगिक खेती से उत्पन्न अनाज हमारे तन-मन के लिए लाभकारी तो हैं ही साथ ही इससे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। जो परिवर्तन का आधार है। दुनिया में जितनी भी बीमारियां बढ़ रही है उसके पीछे हमारा भोजन ही है। पहले लोग जैविक खेती से उत्पन्न भोजन करते थे जिससे वह दीर्घायु और निरोगी होते थे। विचारों की शुद्धि बहुत जरूरी है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनीजी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राज.

बापू का निश्चय लाया रंग — महाराष्ट्र के किसान का अद्‌भुत अनुभव

'परमात्मा ने की फसल की रक्षा'

राजयोग के प्रयोग से भीषण गर्मी में नहीं सूखी टमाटर की फसल

कोल्हापुर (महाराष्ट्र). ग्राम चिपरी इचलकरंजी, जिला कोल्हापुर, महाराष्ट्र के किसान कुमार बापू पोवार अपना अनुभव सुनाते हुए बताते है कि सन् 2006 में सरपंच के महासम्मेलन में भाग लेने के लिए माउण्ट आबू आने का अवसर मिला। वहां का आध्यात्मिक वातावरण और भाई-बहनों का निःस्वार्थ स्नेहपूर्ण व्यवहार हमारे दिल को छू गया। इसके पश्चात इचलकरंजी सेवाकेंद्र पर ग्राम विकास प्रभाग द्वारा यौगिक खेती पर मार्गदर्शन का कार्यक्रम रखा हुआ था। मैं भी उस कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ और वहां के किसान भाईयों के यौगिक खेती के सफल अनुभव सुनने को मिले, तो मुझे भी प्रेरणा आई कि मैं भी इसका अपनी खेती पर प्रयोग करूं। फिर मैंने परमात्मा को याद करके एक प्लॉट पर टमाटर के बीज बोये और हर रोज खेत पर जाकर शक्तिशाली योगाभ्यास करता। योग द्वारा बायब्रेशन से बीज बहुत अच्छी तरह से अंकुरित होने लगे।

मुझे परमात्मा पर पूरा निश्चय था

24 अप्रैल 2008 की बात है उस समय बहुत गर्मी पड़ रही थी। जिसके कारण आसपास के खेतों के पौधे सूखने लगे, लेकिन मुझे परमात्मा पर पूर्ण निश्चय था कि वो मेरे खेत को कुछ नहीं होने देंगे। मेरा यह निश्चय रंग लाया और हमारे पौधे बहुत अच्छी तरह से बढ़ते रहे। जिसे देखकर आसपास के किसान भी आश्चर्यचकित रह गए।

इसी खेत में पहले ज्वार की फसल ली थी, उसे निकालने के बाद मैंने किसी भी प्रकार की खाद व कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया। फसल को हमने सिर्फ योग द्वारा शांति, शक्ति, पवित्रता, प्रेम, सुख एवं आनंद के वायब्रेशन राजयोग के अभ्यास के द्वारा दिए। इसी प्रयोग से टमाटर के पौधे एकदम निरोगी और शक्तिशाली होकर बढ़ रहे थे। मैंने खेत में परमात्मा का झंडा भी लगाया और वहीं बैठकर मैं पेड़-पौधों को सकाश देता था। परिणामस्वरूप कल्पना से भी ज्यादा अच्छी फसल आई। यौगिक खेती के इस टमाटर प्लॉट को स्टार टीवी के एक पत्रकार ने इसे 9 अगस्त 2008 को 'स्टार माझा' मराठी टीवी चैनल पर तीन बार प्रसारित किया। हमारी इस सफलता को देखकर गांव के अन्य किसानों ने भी यौगिक खेती को प्राथमिकता दी और कम लागत में अच्छी और गुणवत्ता युक्त फसल का उत्पादन कर रहे हैं।

शाश्वत यौगिक खेती से टमाटर की फसल लहलहाते हुए।

बैंगन की फसल को योग के प्रकम्पन से शुभ बायब्रेशन देते हुए किसान।

यौगिक खेती और रासायनिक खेती का तुलनात्मक अध्ययन

महाराष्ट्र राज्य के कोल्हापुर जिले में टमाटर की फसल पर यौगिक खेती तथा रासायनिक खेती का तुलनात्मक प्रयोग शिरोल तहसील के चिपरी गांव में किया गया। इन दोनों प्रयोगों में टमाटर की नामधारी 2535 जाति पर प्रयोग किया गया था। दोनों प्रयोगों से प्राप्त उपज का प्रयोगशाला में विश्लेषण भी किया गया। उसके आधार पर इसके निम्नलिखित परिणाम सामने आए।

यौगिक खेती

किसान का नामः कुमार बापू

क्षेत्रफलः 18 आर	
बुवाई की तारीखः 24 अप्रैल 2008	
पौधे लगाने की तारीखः 25 मई 2008	
1. इस प्रयोग में फसल को किसी भी प्रकार की जैव, सैन्द्रिय या जीवांश तथा रासायनिक खाद का इस्तेमाल नहीं किया गया था।	
2. फसल पर कोई भी जैविक तथा रासायनिक कीटनाशक दवा का इस्तेमाल नहीं किया गया।	
3. खेत को चार बार पानी दिया गया।	
4. इस फसल पर राजयोग (मेडिटेशन) का प्रयोग किया गया।	
5. जुताई तक का खर्च रुपए:	1360.00
6. बीज का खर्च	440.00
7. खाद का खर्च	00.00
8. फसल संरक्षण खर्च	00.00
9. अन्य खर्च	4220.00
(मजदूरी-निराई, पानी देना, सुतली से बांधना)	
10. कुल खर्च	6020
11. कुल खर्च प्रति एकड़	13378.00
12. उपज	6150 किलो/18 आर
13. उपज	13667 किलो प्रति एकड़
14. उपज का मूल्य	77446.00 प्रति एकड़
15. मुनाफा रुपए	64068.00 प्रति एकड़

रासायनिक खेती

किसान का नामः दिनकर तातोबा पोवार

क्षेत्रफलः 38 आर (गुंठा)	
बुवाई की तारीखः 25 अप्रैल 2008	
पौधे लगाने की तारीखः 28 मई 2008	
1. इस प्रयोग में यूरिया 50 किलो, पोटाश 200 किलो, सुपर फास्फेट 100 किलो, सम्पूर्णा (19:19:19) - 100 किलो, डीएपी 200 किलो, नीम की खली 250 किलो।	
2. फसल पर रासायनिक कीट तथा कीटनाशकों का इस्तेमाल किया गया जो निम्न हैः एम 45 एक किलो, टिलटॉप एक लीटर, बायोक्टिन 1 किलो, रोगर 1 ली., डूनेट 1 किलो, टोपास 1 किलो।	
3. खेत को चार बार पानी दिया गया।	
4. इस फसल पर राजयोग का प्रयोग नहीं किया गया।	
5. जुताई तक का खर्च रुपए	3200.00
6. बीज का खर्च	660.00
7. खाद का खर्च	9800.00
8. फसल संरक्षण खर्च	3000.00
9. अन्य खर्च	10080.00
10. कुल खर्च	26740.00
11. कुल खर्च प्रति एकड़	28147.00
12. उपज	14400 किलो/38 आर
13. उपज	15158 किलो प्रति एकड़
14. उपज का मूल्य	85895.00 प्रति एकड़
15. मुनाफा	57778.00 प्रति एकड़

यौगिक-जैविक एवं रासायनिक खेती यह अंतर आया।

यौगिक खेती पद्धति और रासायनिक खेती से उत्पन्न फसल।

वैज्ञानिकों ने भी माना वनस्पति में होती संवेदनाएं

... कोई शक्ति होती है

चार्ल्स डार्विन

चार्ल्स डार्विन नामक वैज्ञानिक ने अपने प्रयोग में यह स्पष्ट किया कि वनस्पतियों में कोई शक्ति होती है जिस द्वारा वनस्पतियों को समझ व बुद्धि प्राप्त होती है। उन्होंने अपने दि पॉवर ऑफ मूवमेंट इन प्लांटस किताब में लिखा है कि वनस्पतियों के जड़ों के रेशों पर जो जीवाणु होते हैं वह ब्रेन के समान कार्य करते हैं। ये कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ये पेशियां वनस्पतियों के लिए ब्रेन का काम करती है, जो संदेश को ग्रहण करती है और हलचल को नियंत्रण करती है।

प्रकृति से प्रेम जरूरी

वॉशिंगटन कार्व्हर

अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जार्ज वॉशिंगटन कार्व्हर के खेती संबंधित विभिन्न प्रयोगों को देखकर कई लोगों ने उनसे पूछा कि क्या आपके जैसे प्रयोग व अनुभव और कोई कर सकता है? तो उन्होंने अपना हाथ टेबल पर रखी हुई बाइबिल पर रखकर जवाब दिया कि सब रहस्य इसमें छिपे हुए हैं, परमात्मा के आश्वासनों में। केवल यह आश्वासन ही सत्य है, इसमें असीमित ताकत है, जिन्हों का विश्वास है वह सभी मेरे जैसे अनुभूति व प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए प्रकृति तथा वृक्ष वनस्पतियों से प्रेम करना होगा।

पौधों से करते संवाद

ल्यूथर बरबेंक

वनस्पति वैज्ञानिक ल्यूथर बरबेंक ने एक प्रयोग में निवडूंग वनस्पति को अर्जी डाली कि वे अपने कांटे निकाल लेवें। तो निवडूंग ने भी मान लिया और संरक्षण के लिए जो कांटे थे वे निकालने के लिए तैयार हुए। उनके पास निसर्ग तथा पेड़-पौधों के साथ संवाद करने की शक्ति थी। 18 अप्रैल 1906 के भूकम्प में जब सनफ्रान्सिस्को का विध्वंश हुआ तब बरबेंक का मकान भूकम्प केंद्र बिन्दु से पास ही था, फिर भी उनके मकान के झरोखों की एक भी कांच नहीं टूटी। बरबेंक का कहना था निसर्ग के साथ एक विलक्षण दोस्ती का संबंध जुटाने का यह परिणाम था।

वनस्पति का व्यक्तित्व

मानस भौतिक शास्त्र के जनक फेहनर ने अपने प्रयोग द्वारा सिद्ध किया कि वनस्पति का व्यक्तित्व होता है। वनस्पतियों को स्वयं को लगने वाली अन्न की जरूरत कितनी है, यह मालूम पड़ता है और वह अपनी जरूरत के अनुसार आपे ही प्राप्त कर लेती है। सिर्फ उनके के जानने या प्राप्त करने का मार्ग अलग है।

संगीत सुनाने से उत्पादन में हुई बढ़ोतरी

भारतीय शास्त्रज्ञ डॉ. टीसी सिंग ने चेन्नई स्थित अन्नामलाई विश्वविद्यालय में बांसुरी, वायलिन, वीणा, हारमोनियम आदि वाद्य यंत्रों द्वारा वनस्पतियों पर अनेक प्रयोग किए और सिद्ध किया कि पेड़ों का बढ़ना तथा फूल-फल व बीज इत्यादि के विकास पर संगीत का अनुकूल परिणाम दिखाई देता है। एक प्रयोग द्वारा उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पत्तों की संख्या 72 प्रतिशत बढ़ गई तो पेड़ का विकास 20 प्रतिशत ज्यादा दिखाई दिया। मद्रास व पांडिचेरी स्थित सात कस्बों में उन्होंने संगीत का प्रयोग किया तो अनाज के उत्पादन में 25 से 60 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। उपरोक्त उदाहरण से यह सिद्ध होता है कि मन की शक्तियों का प्रकृति पर प्रभाव पड़ता है वनस्पति में भावनाएं भी होती हैं।

पाठक पीठ

हर पन्ना नवीन

शिव आमंत्रण का हर पन्ना मन में एक नवीनता का एहसास कराता है। हमारे जीवन के प्रति जो भी धारणाएं हैं उसे नए तरीके से समझाता है। जिससे अलौकिक अनुभव होता है। हम चाहते हैं कि शिव आमंत्रण हमें नई-नई बातें सिखाए। जिससे जीवन में उमंग-उत्साह आ जाए।

ब्रह्मवीर भाई, सदाशिवपेठ, पुणे, महाराष्ट्र

मेरी आंखें खोल दी

परमात्मा की सत्य पहचान लेख ने हमारी आंखें खोल दी। आज के इस भौतिकतावादी युग में हम भगवान किसे माने यह स्पष्ट नहीं था, लेकिन इस अंक ने हमारी आंखें खोल दी और परमात्मा का सत्य परिचय का एहसास कराया। इस समाचार-पत्र में दी गई जानकारी तर्कसंगत और वैज्ञानिक होती है।

कांतिलाल पटेल, अहमदाबाद, गुजरात

हमेशा रहती प्रतीक्षा

शिव आमंत्रण की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। हमें इसके प्रकाशन की बेसब्री से प्रतीक्षा रहती है। हमारे पास आज जो भी पेपर आता है उसमें शिव आमंत्रण मुझे ज्यादा रोचक लगता है। इस पेपर में ज्ञान को बहुत ही गहराई और प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह पेपर गागर में सागर के समान है।

दामोदर प्रसाद, बी देवघर, झारखंड

पठनीय पेपर

शिव आमंत्रण का हर अंक रोचक है, लेकिन इसमें आने वाली दुनिया की तैयारी का अंक बहुत ही उत्साहवर्द्धक लगा। इसके सभी लेख बहुत अच्छे थे। वहीं जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था का लेख बहुत ही आकर्षक एवं प्रेरणा देने वाला था। मूल्यनिष्ठ शिक्षा का अंक भी बहुत ही पठनीय है।

गिरिजा प्रसाद, शाहदरा, दिल्ली

आत्मा का ज्ञान हुआ

आज तक मैं स्वयं को शरीर मानकर कर्म करता था। मुझे आत्मा की स्मृति नहीं थी और यह भी मालूम नहीं था कि इस शरीर को कौन चलाता है। आत्मा के तीनों कालों की कहानी लेख पढ़कर मुझे आत्मा का ज्ञान हुआ। इसका प्रत्येक अंक ज्ञान से भरपूर और तर्कसंगत रूप में व्याख्या करता है।

केशव लाल, नागपुर, महाराष्ट्र

एक-एक शब्द अनमोल

इसका एक-एक शब्द अनमोल और ज्ञान से भरा हुआ है। जब से शिव आमंत्रण पढ़ा है मेरा आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ा है। इसमें दिए गए लेख वैज्ञानिक तरीके से ज्ञान की स्पष्ट व्याख्या करते हैं। मूल्यनिष्ठ शिक्षा अंक बहुत ही अद्‌भुत है। साथ ही दादीजी के विशेषांक मुझे अद्‌भुत लगा।

जितेन्द्र सिंह राजपूत, एडवोकेट, बीना, सागर, मप्र

प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर भेंजे। प्रकाशन योग्य होने पर इसे प्रकाशित किया जाएगा।

पताः ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया विंग एण्ड पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड जिला-सिरोही, राजस्थान, पिन कोडः 307501 (फोनः 02974-228230)

Email- shivamantran.media@gmail.com

यौगिक खेती प्राकृतिक पद्धति

हमारे जीवन का आधार हमारे गांव हैं जहां के कृषकों के द्वारा उत्पादित अनाज पर हमारा जीवन चलता है। आज स्वास्थ्य का स्तर जिस तेजी से गिरता जा रहा है वह निश्चय ही चिंता की बात है। इसमें एक बड़ा योगदान हमारे द्वारा ग्रहण किए जाने वाला खाद्य पदार्थों का भी है। यौगिक खेती पद्धति प्राकृतिक पद्धति है। हम सभी को अपनी प्रकृति को समझना बहुत ही आवश्यक है। जो प्राकृतिक चीजें होती हैं वह हम सब को प्रिय लगती है। प्रकृति प्रदत हमारा यह शरीर प्राकृतिक चीजों को ही ग्रहण करता है, कृत्रिम चीजों को नहीं। इसलिए हमें खेती भी प्रकृति के नियमानुसार ही करनी चाहिए।

ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

राजयोग से सहज ही सब मिल जाता

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान को जीवन में धारण करने से भ्रष्टाचार और अनैतिक कार्य समाप्त हो जाएंगे। हमें भगवान से कुछ भी मांगने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने से वह सब चीजें हमें सहज ही मिल जाती है। लोगों ने भगवान को दूर कर दिया है जबकि वह तो हमारी यादों में बसा होता है। जैसा हम अन्न खायेंगे वैसे ही आत्मा के गुण विकसित होंगे।

वीरसिंह काली, हरियाणा सिविल सर्विस, फरीदाबाद

मिसाल बच्चों की तरह दुलारते और प्रेम करते थे फसल को

पौधे देते अच्छे-बुरे की प्रतिक्रिया

करनाल हरियाणा के किसान ने अपने खेत पर यौगिक खेत प्रधान कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में की और लैब में उपज की जांच करने पर पाया कि यौगिक खेती से उपजाई गेहूं में फाइबर की मात्रा ज्यादा पाई गई साथ ही दाना चमकदार भी रहा।

करनाल के किसान ज्ञानसिंह अपनी गेहूं की फसल को दुलारते हुए।

करनाल (हरियाणा). वैज्ञानिकों और अनुसंधानों में यह स्पष्ट हुआ है कि पौधों में भी मानव की तरह संवेदनाएं होती है वह भी अच्छे और बुरे विचारों पर प्रतिक्रिया देते हैं। मेरा तो यहां तक मानना है कि पेड़-पौधों में दिमाग भी होता है। यह कहना है ग्राम गगसीना जिला करनाल, हरियाणा निवासी किसान ज्ञानसिंह का। आपने भी अपने खेत में योग के प्रयोग किए और परिणाम भी चौंकाने वाले। जिसका परीक्षण वैज्ञानिकों की देखरेख में लैब में किया गया।

उन्होंने बताया कि सन् 2008 में ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन भाग लिया। जिसके बाद मुझे यौगिक खेती करने की प्रेरणा मिली। सम्मेलन में रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में जानकर मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने निश्चय किया कि यौगिक खेती जरूर करेंगे। 10 नवंबर 2011 को मैंने गेहूं अनुसंधान निदेशालय करनाल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में दो एकड़ जमीन में विधिपूर्वक यौगिक खेती के तहत फसल बुआई की।

चार प्लॉटों में बांटा था खेत को

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल के मार्गदर्शन में दो एकड़ खेत को चार भागों में बांटा। जिसके बराबर चार हिस्से किए। एक भाग में यौगिक और जैविक खेती की। दूसरे हिस्से में सिर्फ जैविक खेती, तीसरे में बिना खाद के फसल उत्पादन और चौथे हिस्से में रासायनिक खेती। सभी हिस्सों में बराबर अन्न की बुआई की लेकिन जो परिणाम आए वह सभी के अलग-अलग थे।

गेहूं की फसल में किया गया परीक्षण

पद्धति	पौधा की लंबाई (सेमी में)	चौड़ाई	उपज क्विंटल/हेक्टेयर	1000 दानों में प्रोटीन की मात्रा
यौगिक+जैविक	112.35	7.9	20.55	9.28
जैविक	100.90	7.6	16.63	8.95
रासायनिक	155.55	8.4	19.50	9.23

यौगिक+जैविक खेती में पाया गया सबसे अधिक प्रोटीन।

बासमती चावल फसल वर्ष 2012-13

पद्धति	पौधा की लंबाई (सेमी में)	चौड़ाई	1000 दानों का वजन(ग्रा.)	उपज कि./प्रति हेक्टे.
यौगिक+जैविक	143.2	24.6	23.8	43.61
जैविक	145.8	26.8	23.94	33.79
रासायनिक	135.0	25.7	23.34	41.21

यौगिक+जैविक खेती में उत्पादन क्विंटल/हेक्टेयर सबसे ज्यादा रहा।

फसल पकने तक किया नियमित योग

इसके बाद फसल पकने तक नियमित खेत में एवं घर से फसल को राजयोग के माध्यम से शुभ संकल्प और श्रेष्ठ वायब्रेशन दिए। प्रतिदिन खेत में आधा घंटे बैठकर अपनी फसल को दुलारता, उसे प्यार से साकाश (दृष्टि) देता और योग के माध्यम से फसल में शक्ति भरता, यह क्रम फसल के पकने तक जारी रखा। साथ ही जैविक खाद का भी प्रयोग किया। खेत में परमपिता शिव परमात्मा की स्मृति का प्रतीक एक शिव ध्वज भी खेत में फसल के बीच में लगाया। जब फसल पकी और अनाज उत्पादन का जो प्रतिशत आया वह चौंकाने वाला था।

विचारों का वनस्पतियों पर पड़ता है प्रभाव

गेहूं अनुसंधान निदेशालय करनाल हरियाणा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुभाष गिल ने परीक्षण में किया साबित

डॉ. सुभाष गिल

विचारों का प्राणियों के साथ वनस्पति पर भी प्रभाव पड़ता है। वनस्पतियों में भी संवेदनाएं होती है। उन्हें भी अच्छा संगीत सुनने और शुभ संकल्पों से सकारात्मक प्रभाव महसूस होता है। वनस्पति वैज्ञानिक डॉ. जगदीशचंद्र बोस ने अपने प्रयोग में यह सिद्ध कर दिखाया है कि वनस्पति भी हमारी संवेदनाओ व विचारों से प्रभावित होती है।

दुनिया में जिस तरह से रासायनिक खेती का चलन बढ़ रहा है यदि हालात यही रहे तो वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक मनुष्य कैंसर, अल्सर, एसीडिटी, डायबिटीज, दिल की बीमारी जैसे गंभीर रोगों से ग्रसित होंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए आज कई देशों में किसान तेजी से जैविक खेती की ओर आकर्षित हो रहे है। लेकिन इसमें पैदावार रासायनिक की तुलना में कम आती है जो कि किसानों को आर्थिक रूप प्रभावित करती है। वहीं हम जैविक के साथ यौगिक खेती करते है तो फसल का उत्पादन भी रासायनिक खेती के समतुल्य होता है। साथ ही इसमें लागत भी कम आती है। यौगिक-जैविक खेती से उत्पादित अन्न के बल हानिकारक रसायनों से मुक्त होता है, बल्कि उसका सेवन हमारे शरीर व मन को शांत रखने में सहायक सिद्ध होता है। कहा भी गया है जैसा अन्न, वैसा मन। कई किसानों ने जैविक-यौगिक खेती के प्रयोग किए और परिणाम बहुत ही सकारात्मक प्राप्त हुए। इसी को ध्यान में रखते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग ने वैज्ञानिक रूप से तथ्य जुटाने के लिए कृषि विश्वविद्यालय, दंतेवाड़ा गुजरात में वैज्ञानिक प्रयोग किए गए। जिसके काफी सकारात्मक परिणाम मिले। गेहूं-धान प्रणाली पर मैंने कई किसानों को जैविक-यौगिक खेती पद्धति से फसल उत्पादन अपने मार्गदर्शन में कराया, जिसके परिणाम सकारात्मक आए।

डॉ. सुभाष गिल, प्रधान वैज्ञानिक, गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल, हरियाणा

विचार सबसे बड़ी शक्ति

सभी मनुष्यों का लक्ष्य यही है कि हम निरोगी रहें, शांत, शीतल और सात्विक वृत्ति को धारण कर सुखमय और आनंदित जीवन जिएं। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पौष्टिक और सात्विक अन्न का सेवन करना बहुत जरूरी है। प्रकृति को सतोप्रधान बनाने तथा मानव मात्र के तन-मन को सुख शांतिमय निरोगी व तनावमुक्त बनाने के लिए ग्राम विकास प्रभाग द्वारा शाश्वत यौगिक खेती पद्धति का विकास किया गया है। यह नए युग के लिए नया कदम है। यौगिक खेती के माध्यम से सैकड़ों किसानों की जिंदगी बदली है। इससे हम कम खर्च में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। यौगिक खेती के लिए सबसे पहले हमें राजयोग का अभ्यास सीखना जरूरी है।

बीके राजू भाई, मुख्यालय संयोजक, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

यौगिक खेती से ही आएगी उर्वरा शक्ति

अध्यात्म मन के अंधकार को मिटाकर जीवन को रोशन करता है। विज्ञान और अध्यात्म का गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। आज शारीरिक रूप से उत्पन्न सभी समस्याओं का मूल कारण हमारा खानपान ही है। क्योंकि हम जो भी खा रहे है चाहे वह अनाज, फल, सब्जी सब रासायनिक खाद और फर्टिलाइजर से तैयार किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप कैंसर, डायबिटीज, एसीडिटी जैसी भयानक बीमारियां हो रही है। फसल में पोषक तत्वों की कमी से शरीर में भी पोषक तत्वों की कमी हो गई है। यौगिक खेती को सिर्फ एक उत्पादन का जरिया न समझे उसको पूरा जीविका का जरिया समझें। जमीन की उर्वरा शक्ति को हम यौगिक खेती द्वारा ही वापस ला सकते हैं। स्वच्छ यौगिक खेती पद्धति से खेती करने पर कम लागत में रासायनिक खाद से की गई खेती के समतुल्य उत्पादन होता है। यौगिक खेती हमारी प्राचीन खेती पद्धति है। आज मनुष्य विकृति आने के पीछे खाद्य-पदार्थ का भी बहुत योगदान है। अगर हम अच्छा खायेंगे, अच्छा सोचेंगे तो मन पर भी अच्छा प्रभाव होगा।

डॉ. आरएन पदारिया, मुख्य वैज्ञानिक, आईएआरई, दिल्ली

उत्पादन बढ़ाने के लिए यौगिक खेती जरूरी

योग के माध्यम से खेती करने वाले यदि खुश होकर खेती करें तो इसका प्रभाव उत्पादन पर भी पड़ता है। यदि हम अपनी खुशी से काम करेंगे तो उत्पादन दुगुना हो जाएगा। योग के वायब्रेशन प्रकृति के पांचों तत्वों को मिलते हैं। ये एक नया रिसर्च है। मैंने राजयोग का प्रयोग स्वयं पर किया और पाया कि मुझे अच्छे-अच्छे विचार आने लगे, हमारे थॉट की स्पीड कम हो गई। अगर ये रिसर्च आगे की जाए तो इससे समाज को बहुत फायदा होगा। हम जैविक खाद का प्रयोग करें और यौगिक खेती करे, इसमें कुछ और परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें सिर्फ हम अपनी भावना को जोड़ दें। इससे बहुत अच्छा लाभ होगा। अगर हम उत्पादन को बढ़ाना चाहते हैं तो यह वैज्ञानिक पद्धति से संभव नहीं है, बल्कि हमें इसके लिए जैविक और यौगिक खेती को अपनाना होगा। वैज्ञानिक युग में सबसे बड़ी शक्ति एटॉमिक पॉवर को माना जाता है लेकिन इससे बड़ी शक्ति मनुष्य की संकल्प शक्ति है। जिसका प्रभाव पूरे देश, पर्यावरण और परिवार पर पड़ता है।

डॉ. राजेश खजुरिया, डायरेक्टर, इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बड़ौदा

पेड़-पौधों को होता है सच-झूठ का अनुभव

क्लीव बैकस्टर ने लाय डिटेक्टर मशीन से 25 से अधिक वनस्पतियों पर किए प्रयोग, चौंकाने वाले आए परिणाम

प्रसिद्ध वैज्ञानिक क्लीव बैकस्टर ने जगदीशचन्द्र बोस के संशोधन को आगे बढ़ाते हुए सिद्ध कर बताया कि वनस्पतियों में भावनाएं होती है, वे मनुष्य के मन के भाव को समझती है। उन्होंने लाय डिटेक्टर नामक मशीन की सहायता से वनस्पतियों पर कुछ प्रयोग किए। मनुष्य के मन के अंदर की भावनाओं के कारण वनस्पतियों के शरीर के अंदर की ऊर्जा प्रवाह कम ज्यादा होती है। उस प्रभाव को भावनाओं के द्वारा होने वाले प्रतिरोध लाय डिटेक्टर में जो गॅलव्हाना मीटर होता है उससे नापा जाता है। मनुष्य जैसा ही मन की भावनाओं का वनस्पति भी प्रतिक्रिया देती है, यह देखने के लिए उन्होंने ड्रॅसिना नामक वनस्पति का पत्ता यंत्र से जोड़ दिया और उसने मन में सोचा कि हम यह पत्ता जलाए और आश्चर्य की बात कि पत्ता जलाने के विचार मन में आते ही माचिस हाथ में लेने से पहले ही तुरंत यंत्र पर आलेख दर्शाने वाली सूई जोर-जोर से प्रतिरोध दर्शाने लगी। इससे यह सिद्ध हुआ कि उसके मन के भीतर की सोच उस पेड़ को समझ में आ गई है। फिर दूसरी बार उसने इच्छा के विरुद्ध पत्ता जलाने का नाटक किया, तो उस समय पेड़ द्वारा की गई प्रतिक्रिया धीमी गति वाली थी। इससे सिद्ध होता है कि पेड़ को सच-झूठ का अनुभव होता है।

क्लीव बैकस्टर

ऐसे आश्चर्यजनक परीक्षण के पश्चात् उन्होंने लगभग पच्चीस प्रकार की वनस्पतियों पर अलग-अलग लोगों द्वारा लाय डिटेक्टर के जरिए प्रयोग करवाए और सभी जगह उनको पहले जैसा ही परिणाम दिखाई दिया। इससे सिद्ध होता है कि वनस्पति में भी संवेदनाएं होती हैं। उन्होंने आगे जाकर यह भी कहा कि कोई भी वृक्ष या वनस्पति और उसकी पालना करने वाले व्यक्ति में एक अटूट रिश्ता बनता है। ऐसे व्यक्ति चाहे नजदीक हो या कितनी भी दूर हो तो भी वह समान विचारों वाले मित्रों की तरह अपने संकल्पों के आधार से अपने नजदीक वालों की भावनाओं को वनस्पति प्रतिसाद देती रहती हैं। इस भाव-भावनाओं को रोकने का काम कोई भी विद्युत चुम्बकीय शक्ति भी नहीं कर सकती है।

... और फसल हो गई हरी-भरी

कोल्हापुर के किसान ने यौगिक खेती से किया चमत्कार, योग के प्रयोग से लहलहाई गन्ने की फसल, गेहूं की फसल में बढ़ी फायबर की मात्रा

खेत में लहलहाती गेहूं की फसल।

कोल्हापुर (महाराष्ट्र). पूर्वजों से लेकर परंपरागत हमारा खेती का ही व्यवसाय है। मैं ग्राम विकास प्रभाग के कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया। यहां आकर के मुझे मालूम हुआ कि हम योग के प्रयोग से भी यौगिक खेती कर सकते है। मुझे जानकर एक तरफ आश्चर्य हुआ तो दूसरी तरफ यौगिक खेती करने की लालसा। साथ ही मेडिटेशन से खेती कैसे की जाए इस संबंध में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। उस दिन ने मेरे खेती करने की पद्धति और विधि को बदल कर ही रख दिया। यह कहना है ग्राम इचलकरंजी, जिला कोल्हापुर महाराष्ट्र के किसान बाला साहेब श्रीपाल रूगे का।

श्री रूगे बताया कि मैंने सबसे पहले रासायनिक खाद के साथ गन्ने की फसल पर योग का प्रयोग किया और परिणाम सकारात्मक रहे। इसके बाद ब्रकु मनीषा बहन के निर्देशन में दूसरी बार गन्ने की फसल पर यौगिक खेती की और मेडिटेशन का प्रयोग किया। फसल पर मेडिटेशन (योग) करने का फर्क मुझे और आस-पास के किसानों भाइयों को दिखाई देने लगा। जो पहले वाले गन्ने से भी ज्यादा उच्च क्वालिटी की फसल तैयार हुई थी।

खेत में बैठकर करता था प्रतिदिन राजयोग

मैं हर रोज अमृतवेले गन्ने की खेती में बैठकर योग करता था और संकल्प देता था कि परमात्मा की शक्तियां मेरे द्वार जमीन में उतर रही हैं... और फसल को मिल रही है...रासायनिक खाद द्वारा जमीन की जो ताकत कम हो गई थी वह फिर से वापस आ रही है..गन्ने की फसल निरोगी होकर बढ़ रही है। इस दृढ़ संकल्प के प्रकम्पन के द्वारा गन्ना बहुत अच्छा बढ़ने लगा। फिर देखने वाला हर कोई पूछता था कि आपने कौन सी खाद इस्तेमाल की है, जो पहले वाले गन्ने से भी कई गुना ज्यादा यह गन्ना आया है।

बहनजी के साथ सामूहिक योग किया

अप्रैल मास में फसल का रंग पीला दिखाई देने लगा। घर वाले भी भ्रम में पड़ गए कि अब क्या करें? फिर उन्होंने मुझे सलाह दी कि आप इसमें यूरिया का इस्तेमाल करो, ताकि इतनी अच्छी आई हुई फसल हाथ से न निकल जाए। मैं भी उलझन में पड़ गया। मेरे मन में विचार आया कि सेंटर पर बहनजी को समस्या बताते है। इसके बाद बहनजी ने कहा कि हम सब यहां बैठकर प्रकृति को सकाश देंगे।

इसके बाद हम लोगों ने सामूहिक रूप से योग में संकल्प दिया कि पवित्रता के सागर से पवित्र किरणें आकर फसल में उतर रही है और फिर से गन्ने की फसल हरी-भरी हो रही है। इस प्रयोग से गन्ना फिर हरा-भरा दिखाई देने लगा।

गेहूं में बढ़ी फायबर की मात्रा

इसके बाद योग का प्रयोग गेहूं की खेती के ऊपर किया। इसके लिए मैंने दो प्लॉट बनाए। दोनों में समान जैविक खाद का प्रयोग किया, परंतु योग का प्रयोग एक ही प्लॉट पर किया। प्रयोग वाले प्लॉट का गेहूं जांच के लिए लेबोरेट्री में भेजा गया। तो रिपोर्ट से यह पता चला कि प्रयोग वाले अनाज में प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट, कैलोरीज की मात्रा कम हो गई थी तथा उस जगह फायबर की मात्रा बहुत अधिक बढ़ी हुई दिखाई दी और अनाज का आकार भी बढ़ा हुआ दिखाई देने लगा। यह फायबर वाला अनाज शरीर के लिए बहुत ही लाभदायक होता है। इसका एक फायदा यह हुआ कि जमीन के अंदर रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ गई थी।

मेडिटेशन से बीज की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं

आज अनाज, फल और सब्जियों का उत्पादन रासायनिक खाद और कैमिकल के प्रयोग से किया जा रहा है। जो अनेक बीमारियों का कारण बन रहा है। क्योंकि हम जैसा अन्न खायेंगे वैसा ही मन होगा। मानव परिस्थितियों को पैदा करने का कारण स्वयं ही होता है। मेडिटेशन द्वारा हम फसल उत्पादन कर बीज की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। आज हमें जैविक खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। अनाज-सब्जियों में इसी तरह फर्टिलाइजर और रसायनों का प्रयोग होता रहा तो इसके हमें गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते है।

डॉ. एसएस सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभाग प्रमुख, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना, बिहार

दो दिन में ही नष्ट हो गया रोग

जून मास में हमने जैविक खाद डाला। इस खाद में जीवाणु होते हैं जो योग के वायब्रेशन को कैच कर लेते हैं। जैसे संकल्प हम देंगे वैसे ही वे जीवाणु कार्य करने लगते हैं। जून मास में अति वर्षा के कारण गन्ने की बढ़ने की गति तीव्र हो गई। ऐसे करते-करते जुलाई, अगस्त बीत गया और सितम्बर मास आया। इस मास में चारों ओर के गन्ने की फसलों पर लोकरी मावा जैसा रोग फैलने लगा। उसे नष्ट करने के लिए अन्य किसानों ने जहरीले रासायनिक द्रव का प्रयोग किया परंतु हमने संकल्प शक्ति का प्रयोग किया और फसल को योग से शुभ वायब्रेशन दिए परिणाम यह हुआ कि सारे रोग नष्ट हो गया। इस दौरान हमने संकल्प किया कि पवित्रता के सागर से पवित्र किरणें आ रही हैं... और सारे गन्ने के प्लॉट पर फैल रही है... और सारा मावा रोग जलकर नष्ट हो रहा है...। यह अभ्यास सिर्फ दो दिन किया। दो दिन के अंदर सारा रोग नष्ट हो गया। दूसरे किसानों ने जहरीले रासायनिक द्रव का प्रयोग करने लगे उससे गन्ने की फसलों पर से रोग पूरा नष्ट नहीं हुआ परंतु योग के प्रयोग से सौ प्रतिशत रोग नष्ट हो गया। ऐसे प्रयोग कर जो अनुभव प्राप्त हुए उनसे मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया कि हमारे संकल्पों में कितनी ताकत है।

फसल में योग करते भाई-बहनें

ब्रह्माकुमार भाई-बहनों फसल को राजयोग द्वारा शुभ वायब्रेशन देते हुए।

अच्छे बायब्रेशन का प्रभाव होगा

जो धरती कभी सोना उगलती थी आज जहर उगल रही है। खेती में रासायनिक खादों का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करने से आज भूमि बंजर होने के कगार पर पहुंच गई है। बीज बोने के पहले बीज को अच्छे वायब्रेशन दें तो निश्चित ही उसका अच्छा परिणाम सामने आएगा। अगर इससे उत्पादित अनाज हमारे पेट में जाएगा तो इससे अच्छी संस्कृति का निर्माण होगा। अगर हम अच्छा खाते हैं तो इससे अच्छी बातें हमारे मन में आएगी। जिसका असर हमारे शरीर पर भी होगा।

सुभाष राव ठाकरे, पूर्व भूमंत्री, महाराष्ट्र

पड़ता है सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव

आज से ३०-३५ साल पहले जब बारिश अच्छी होती थी तब खेती में उपज बहुत ही अच्छी क्वालिटी की होती थी। आज लोग रासायनिक एवं जैविक दोनों तरह की खेती कर रहे है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक के उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो रही है। साथ ही यौगिक खेती से हमें अच्छे एवं सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। यह बात सही है कि पौधों पर भी सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है।

डॉ.भास्कर राव जादव, डायरेक्टर, रिसर्च कॉकण विद्यापीठ, डापोली

विचारों का पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है

हमारे विचारों का स्वयं पर, हमारे परिवार व पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है और हमारा भाग्य भी इसी के आधार पर बनता है। हमारे विचार अच्छे होने से हमारे आसपास का वातावरण भी अच्छा बन जाता है। हमारे एक-एक संकल्प वायुमण्डल को प्रभावित करते हैं। समाज की स्थिति को बदलने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिया रहा ज्ञान सार्थक है। हमारी यही शुभभावना है कि हमें जो प्राप्ति हुई है वह सभी को हो और लोग भगवान को पहचानें। जिस तरह से सुबह, दोपहर के बाद रात्रि आती है तो उसी प्रकार युगों में भी परिवर्तन होता है।

डॉ. सविता आनंद, संयुक्त सचिव, भूसंसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

जैविक खेती को अपनाने की आवश्यकता

कृषि के सामने पर्यावरण के गंभीर मुद्दे हैं, लेकिन जैविक खेती को अपनाने और उर्वरकों का नियंत्रित इस्तेमाल करने से संकट को दूर किया जा सकता है। हमारा ध्यान केवल कृषि के विकास पर ही न हो, बल्कि हमें किसानों की आर्थिक तरक्की को भी सुनिश्चित करना होगा। देश को युवा किसानों, पुरुष और महिला दोनों की आवश्यकता है। तभी हम देश का सच्चे अर्थों में विकास कर पाएंगे।

एमएस स्वामीनाथन, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय किसान आयोग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

यहां अच्छी शिक्षा दी जा रही है

ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा जो शिक्षा दी जाती है उसे अंगीकार करते हुए पूरे देश को एक नई दिशा देने में हम इस संस्था के साथ आत्मा से जुड़ेंगे।

प्रभुलाल सैनी, पूर्व कृषि एवं सहकारिता मंत्री, राजस्थान

विश्वविद्यालयों में चल रहा शोध कार्य

सरदार कृषि विश्वविद्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों ने यौगिक खेती के संबंध में कृषि वैज्ञानिकों को जानकारी दी गई। विश्वविद्यालय प्रबंधन ने सहमति जताई और 5 साल के लिए एग्रीमेंट करके वैज्ञानिकों के सहयोग से शोध प्रक्रिया शुरू की गई। जिसमें हमें बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। साथ ही अन्य प्रांतों में भी कृषि अनुसंधान केंद्रों व कृषि विश्व विद्यालयों में भी इस पर शोध शुरू किए गए।

कर्म करते भी कर सकते है योग | **राजयोग के अभ्यास ने बदली कई किसानों की जिंदगी**

यौगिक खेती का आधार 'राजयोग'

बीस हजार से ज्यादा किसान व कृषि से जुड़े अधिकारी ले चुके प्रशिक्षण, कई ग्रामों को गोद लेकर किया सम्पूर्ण विकास

वर्तमान समय जिस दौर से दुनिया गुजर रही है और अनेक समस्याएं हमारे सामने खड़ी है उन सभी समस्याओं और परेशानियों का हल राजयोग में समाया हुआ है। शुभभावना और शुभकामना में इतनी शक्ति है जो संसार के हर असंभव कार्य को संभव कर देती है। क्या आप भी दु:ख, चिंता, डर, भय, तनाव, निराशा में जी रहे है तो आपका ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेंद्र पर स्वागत है।

सर्व समस्याओं व परेशानियों का हल राजयोग में समाया हुआ है।

मेहसाना (गुजरात). भारत देश गांवों का देश है। गांवों के विकास में ही भारत का विकास समाया हुआ है। हमारे देश की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में ही निवास करती है। यदि हमें भारत को सुखी-समृद्ध बनाना है तो गांवों को सुखी और समृद्ध बनाना होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना सन् 1996 में की गई। इसका मुख्य कार्यालय पीस पैलेस, मेहसाना, गुजरात में है।

ग्राम विकास प्रभाग ने रासायनिक खादों से उत्पन्न फसल के दुष्परिणामों को लेकर एक गहन अध्ययन किया और अपने शोध में पाया कि इससे उत्पन्न फल, सब्जी, अनाज को खाने से मानव शरीर में अनेक विकृतियां पैदा हो रही है। इसका हल निकालते हुए प्रभाग में वर्षों तक कठिन परिश्रम कर खेती की एक नई पद्धति का विकास किया। जिसे नाम दिया 'शाश्वत यौगिक खेती'। इसका उद्देश्य था कम लागत में अच्छी पैदावार और किसान भाईयों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना।

प्रभाग के भाई-बहनों ने जैविक खाद का उपयोग करते हुए राजयोग (मेडिटेशन) का प्रयोग फसल पर किया। इसके परिणाम आश्चर्यजनक थे लैब में जब इस फसल को परीक्षण के लिए भेजा गया तो पाया कि राजयोग के प्रयोग से उत्पन्न फसल में पौष्टिकता की मात्रा बढ़ गई और दाना ज्यादा चमकदार और बड़ा हुआ।

पांचों तत्वों पर पड़ता है योग का प्रभाव

राजयोगी किसान भाई-बहनों का अनुभव है कि ईश्वरीय वरदान और सहज राजयोग के अभ्यास से ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होती है। इससे अलौकिक जीवन में भरपूरता एवं संतुष्टता की अनुभूति होती है। जिस प्रकार योगी पुरुष का प्रभाव अन्य आत्माओं पर पड़ता है उसी प्रकार वनस्पति पर भी पड़ता है। योग की शक्तियों का नियमित प्रयोग करने से इसका प्रभाव फसल के साथ प्रकृति के पांचों तत्वों पर भी पड़ता है। जिससे सभी प्रकार की वनस्पति फसल या वृक्ष, सूक्ष्म जीव-जंतु एवं पर्यावरण में रहने वाले पशु-पक्षी भी परमात्म शक्ति से भरपूर चैतन्यमय, ऊर्जात्मक बनते हैं। ऐसे प्रकम्पनों से फसल में बीज और फल अच्छा बनता है। जिससे उत्पादित अनाज गुणवत्ता से भरपूर होता है। यही यौगिक खेती की सफलता का प्रमाण है।

कम खर्च में अधिक उत्पादन

शाश्वत यौगिक खेती कम खर्च में अधिक तथा गुणवत्ता युक्त उत्पादन की पद्धति है। यदि किसान यौगिक खेती पद्धति अपनाए तो योग द्वारा अविनाशी प्रकाशमय परमात्मा के पवित्र प्रकम्पन से फसलों की उत्पादन क्षमता तथा गुणवत्ता अवश्य ही बढ़ेगी। कम से कम खर्च में और सहजता से सात्विक और ताकतवर अन्न का निर्माण कर किसान अपने मन, वाणी, कर्म को सम्पूर्ण पवित्र तथा शक्तिशाली बना सकता है। योगबल से प्रकृति के पांचों तत्वों को सकाश देने से मानवीय जीवन पवित्र सुख-शांति से भरपूर बन जाएगा और वह आनन्द का अनुभव करेगा। यौगिक खेती की सफलता का आधार सहज राजयोग है।

योग शक्ति से फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है। जिस प्रकार राजयोग से मानव को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति होती है तो उसी प्रकार सामुहिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन में राजयोग का नियमित अभ्यास करने से सात्विक अन्न का उत्पादन होता है। जो हमारे मन को शांत और बुद्धि को विवेक युक्त बनाता है। इसके साथ ही हमें संपूर्ण स्वास्थ्य भी प्राप्त होता है।

... और प्रकृति में फैलने लगते है प्रकम्पन

आत्मा मूलत: ज्ञानस्वरूप, पवित्र स्वरूप, शांतस्वरूप, प्रेमस्वरूप, सुखस्वरूप, आनंदस्वरूप, शक्तिस्वरूप और दिव्य गुणों से युक्त है और परमात्मा इन गुणों व शक्तियों का सागर है। जब हम स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करते हैं तो परमात्मा की गुण व शक्तियों का संचार आत्मा में होने लगता है और आत्मा स्वयं में भरपूरता का अनुभव करने लगती है। इस अवस्था में जब हम एकाग्र होने का अभ्यास बढ़ाते जाते हैं तो आत्मा से इन गुण व शक्तियों के प्रकम्पन शरीर द्वारा बाहर फैलने लगता है और प्रकृति सभी को इसका अनुभव होने लगता है। आज पूरे विश्व में प्रकृति सहित जीवन-जंतु, पशु-पक्षी, प्राणी, वृक्ष-वनस्पति पर हमारे विचारों का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि ये विचार स्वयं को शरीर समझकर किए जा रहे है। वहीं आत्मा के स्वरूप में रहकर विचार करने से प्रकृति तथा सर्व पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इसमें हमारे विचार विकार रहित होते हैं। और इसका सकारात्मक प्रभाव इस सृष्टि के सभी जीव-जंतुओं सहित प्रकृति पर भी पड़ता है।

...तो बढ़ जाएगी आपकी उपज

आप जब भी खेती में काम करते हैं तो यह संकल्प करें कि परमात्मा की सर्व शक्तियां मेरे द्वारा फसल को मिल रही है... मैं संपूर्ण फरिश्ता खेती में कर्म कर रहा हूं... इसमें शांति की शक्ति का विशेष प्रयोग करें।

आप जहां हैं, जिस स्थिति में हैं और जो आपके पास और जो आपके साथी हैं उसी स्थिति में स्थित होकर जो आप काम कर रहे हैं उस काम के ऊपर ध्यान केंद्रित करें और अपने मन में अच्छे विचारों को लाए। इसका विशेष ध्यान रखें तो इससे स्व सहित सर्व का जीवन आनंदमय हो जाएगा।

सृष्टि का पोषण करना मानव का धर्म

सृष्टि का पोषण और संरक्षण करना मानव का धर्म है। मनुष्य के अच्छे और बुरे विचारों वा भावनाओं का वनस्पतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका अनुभव हमें जैविक खेती में प्रैक्टिकल देखने को मिलता है। पांच विकारों से युक्त विचारों की भावना से वनस्पति की ऊर्जा कम होती है और सकारात्मक सोच-विचार से वनस्पतियों की ऊर्जा बढ़ती है। बल्कि वनस्पति जो हमारे द्वारा नकारात्मक या सकारात्मक विचार ग्रहण करते हैं वह अन्न के माध्यम से फिर से वापिस हमारे अंदर आते हैं। इसी के फलस्वरूप ज्यादा दु:ख, बीमारी या ज्यादा आनन्द, सुख-शांति इनका मानव के जीवन में एक चक्र तैयार होता है। किसी भी प्रकार का बीज बोने से पहले सकाश दें... बीज के अंदर परमात्मा की शक्ति भर रही है... बीज को ऊपर से संकल्पों के रूप में पवित्रता की शक्ति से लपेट लें... फिर परमात्मा की याद में उसे जमीन में बो दें। ऐसे ही कोई जैविक खाद जमीन में डालने से पहले परमात्मा का आह्वान कर खाद को शक्तिशाली बनाएं फिर जमीन में डाल दें। ऐसे ही बहुत सारी विधियां हैं जो आप अपनी रीति से भी कर सकते हैं। आप जो भी प्रयोग करें उसमें श्रद्धा भावना के साथ दृढ़ता और निश्चय बहुत ही जरूरी है तभी हमें सफलता मिलेगी।

खेती में योग का प्रयोग

राजयोग के अभ्यास के लिए प्रात: ब्रह्ममुहूर्त 4 से 5 बजे का समय सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस समय चारों ओर वातावरण अत्यंत शांत होता है और मन ताजा होता है। अपने घर के कोई भी स्वच्छ और शांत स्थान को योग के अभ्यास के लिए निश्चित कर लें तो हमें सफलता सहज ही मिल जाएगी। हम आत्मा स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करते हैं तो बुद्धि द्वारा वह दृश्य भी सामने देखना है जिस पर प्रयोग करना है। उस खेती या फसल को बुद्धि के नेत्र द्वारा सम्मुख देखते हुए योग के अभ्यास से पांच मिनट तक एकाग्र होना है। इस अभ्यास द्वारा खेती या फसल में बहुत अच्छे और चमत्कारिक परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं। इसके लिए सातों गुणों के प्रयोग से होने वाले लाभ को बताया गया है:

- **ज्ञानस्वरूप स्थिति:** जब हम आत्मा ज्ञानस्वरूप स्थिति में स्थित होकर ज्ञानसूर्य परमात्मा की याद में एकाग्र होते हैं तो वनस्पतियों को बढ़ाने के लिए जिस चीज की आवश्यकता होती है, उसकी उपलब्धता जमीन में बढ़ती है और वनस्पति उस उपलब्धता का शोषण करने लगती है। वनस्पति अपनी आवश्यकता की उपलब्धि को बढ़ाने के लिए जमीन को जड़ द्वारा संकेत देती है। इस अभ्यास में एकाग्र होने से आत्मा द्वारा निकलने वाले प्रकम्पन जब वनस्पति तक पहुंचते हैं, तो वनस्पति के अंदर की सारी क्रियाएं प्रेरणात्मक रूप में होने लगती है। जमीन में से अन्न घटक जड़ों द्वारा पत्तों तक जाना, अन्न का तैयार होना और तैयार हुआ अन्न वनस्पति में अपनी जगह तक पहुंचना, इस कार्य में कोई भी रूकावट नहीं आती है। वनस्पति में अन्न की वृद्धि के कार्य में भी इस अभ्यास से ज्यादा लाभ होता है।
- **प्रयोग:** एक बर्तन में पानी लें और उसमें अपनी अंगुली रखें। अब अभ्यास करें... मैं आत्मा ज्ञान स्वरूप हूं, ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ आत्मा द्वारा अंगुली के माध्यम से इस जल में पहुंच रही है... कम से कम 10 मिनट तक इसी एक संकल्प में एकाग्र हो जाएं। फिर उस पानी का छिड़काव फसल पर कर दें... इससे काफी लाभ होता है।
- **पवित्रस्वरूप स्थिति:** जब हम आत्मा पवित्र स्वरूप में स्थित होते हैं तो पवित्रता के सागर की स्मृति में एकाग्र हो जाते हैं। इससे हमारे द्वारा निकलने वाले पवित्र, प्रकम्पन जमीन या वनस्पति में प्रदूषण द्वारा जो भी कीटाणु हैं, उसे नष्ट कर देते हैं। जिससे जमीन तथा वनस्पति निरोगी बन जाती है। इस पवित्र प्रकम्पन से वनस्पतियों पर कोई भी कीट या रोग आता है, तो उसे प्रतिकार करने के लिए वनस्पतियों में एक विशिष्ट प्रकार की शक्ति का निर्माण होता है, जो इन कीट या रोग को बढ़ने नहीं देता है। अगर हम पानी में अंगुली रखकर पवित्र स्वरूप में स्थित होकर पवित्रता के सागर को 10 मिनट एकाग्र होकर याद करते हैं फिर वह पानी फसल पर छिड़कते या जमीन पर डालते हैं तो रोग नियंत्रण में आ जाता है।
- **शांतस्वरूप स्थिति:** जब हम आत्मा शांत स्वरूप में स्थित होकर शांति के सागर की याद में एकाग्र होते हैं तो शांति के प्रकंपन जमीन और वनस्पति को मिलने लगते हैं। प्रदूषण द्वारा जमीन और वनस्पतियों में जो तनाव आता है वह इस प्रकम्पन से दूर हो जाता है। और जमीन के अंदर जो जीवाणु होते हैं, उनकी क्रियाएं सुचारू रूप से होने लगती है। वनस्पतियों में प्रकाश संश्लेषण का कार्य, श्वसन क्रिया सामान्य रीति से होने लगती है। हरित द्रव्य का प्रमाण बढ़ता है और वनस्पति के अंदर की क्रियाएं सामान्य रूप से होने लगती है। इसके लिए हमें पानी में अंगुली रखकर शांति स्वरूप से शांति के सागर की याद में 10 मिनट एकाग्र होकर यह पानी फसल या जमीन पर छिड़कने से फायदा होता है।
- **प्रेम स्वरूप स्थिति:** जब आत्मा प्रेम स्वरूप में स्थित होकर प्रेम के सागर की याद में लवलीन होती है, तो जमीन तथा वनस्पतियों को भी प्रेम की अनुभूति होने लगती है। जमीन में वनस्पतियों के बढ़ने के लिए आवश्यक जीवनसत्व का निर्माण करने की शक्ति बढ़ती है। वनस्पतियों में जो भी क्रियाएं होती है, अन्न को शोषण करना, आगे की वृद्धि का निर्माण करना, प्रकाश संश्लेषण तथा श्वसन इत्यादि के लिए जगह उपलब्ध होने से प्रेम के प्रकम्पन से बहुत मदद मिलती है। हमारी शुद्ध भावनाओं का परिणाम इस अभ्यास द्वारा सहज ही मिल जाता है। इसके लिए पानी में अंगुली रखकर प्रेमस्वरूप में स्थित होकर हमें प्रेम के सागर परमपिता परमात्मा की याद में 10 मिनट एकाग्र होकर यह पानी फसल पर या जमीन पर छिड़कने से बहुत लाभ मिलता है।
- **सुखस्वरूप स्थिति:** जब आत्मा सुख स्वरूप में एकाग्र होकर सुख के सागर को याद करने लगती है तो आत्मा से निकलने वाले वायब्रेशन द्वारा जमीन में जीवाणुओं की मात्रा बढ़ती है। इससे ज्यादा समय तक कार्य शक्ति बढ़ती है और वनस्पतियों में थुर तथा डालियों की वृद्धि होती है तथा अनाज या फसल का आकर भी बढ़ता है और पौष्टिकता भी बढ़ती है।
- **आनंदस्वरूप स्थिति:** जब हम आनन्दस्वरूप स्थिति में एकाग्र होकर आनंद के सागर में खो जाते हैं तो जमीन के अंदर के हार्मोन्स बढ़ते हैं। वनस्पतियों में फूल और फल को धारणा बहुत बढ़ जाती है। जिससे वनस्पतियों में तेज आ जाता है। फिर उत्पादित अनाज में भी चमक आ जाती है और स्वाद भी बढ़ जाता है। पुनरुत्पादन की शक्ति इस वायब्रेशन से वनस्पतियों को मिलती है।
- **शक्तिस्वरूप स्थिति:** जब आत्मा शक्ति स्वरूप में स्थित होकर सर्वशक्तिमान के याद की लगन में मगन हो जाती है तो आत्मा द्वारा निकलने वाली शक्तियों के प्रकम्पन जमीन को शक्तिशाली बनाते हैं। फसल में योग्य जीवाणुओं की मात्रा बढ़ जाती है। वनस्पति सुदृढ़ और शक्तिशाली होकर बढ़ती है। जिससे किसी भी रोग या वायरस का प्रभाव वनस्पति पर नहीं होता है। फसल की उत्पादन बढ़ाने के लिए हमारे शक्तिशाली प्रकम्पन बहुत ही मदद करते हैं।

दिव्य गुणों की अनुभूति से उत्पादकता में सात्विकता

- **राजयोग संपूर्ण विज्ञान:** परमात्मा की याद में दिव्य गुणों की अनुभूति करने से अनाज की उत्पादकता में सात्विकता आती है, जो अनाज अन्न के रूप में मानव के मन पर प्रभाव डालता है। राजयोग एक संपूर्ण विज्ञान है जो मन की सूक्ष्म शक्तियों का स्रोत है। राजयोग की शक्ति ऐसा महान कार्य कर सकती है, जो विज्ञान से भी श्रेष्ठ और विज्ञान से भी आगे ले जाने वाली है और असंभव भी संभव हो जाता है।
- **परमात्म शक्तियों से करें भरपूर:** कई बार हम अपनी प्रयोग वाली खेती को परमधाम में ले जाकर परमात्मा शक्तियों से भरपूर कर सकते हैं। जो आत्मा और परमात्मा का मूल रहने का स्थान है जो कि इस पांच तत्वों से पार लाल सुनहरा प्रकाश तत्व है, जिसे परमधाम अथवा ब्रह्माण्ड कहा गया है। ऐसे ही कभी परमात्मा को नीचे आह्वान करके जमीन तथा फसल को श्रेष्ठ संकल्पों के प्रकम्पन दे सकते हैं।
- **आत्मअभिमानी स्थिति में करें कार्य:** कोई कर्म खेती में कर रहे हैं तो भी आत्म-अभिमानी बनकर परमात्मा को याद करने से अपने अंदर से निकलने वाले श्रेष्ठ प्रकम्पन से जमीन तथा फसल पर बहुत ही सुंदर परिणाम दिखने लगते हैं। अगर हम कभी अपनी खेती से एकदम नजदीक का अनुभव कर सकते हैं। कितने भी दूर होंगे तो भी हमारे संकल्प वनस्पति तथा जमीन तक पहुंचते हैं। ऐसे ही व्यक्ति चाहे नजदीक हो या कितनी भी दूर हो, तो भी वह समान विचारों वाले मित्रों की तरह अपने संकल्पों के आधार से अपने आंतरिक भावनाओं को वनस्पतियों तक पहुंचा सकते हैं और वनस्पतियां इसका प्रतिउत्तर देने लगती है। इस भाव-भावनाओं को रोकने का काम कोई विद्युत चुम्बकीय शक्ति भी नहीं कर सकती है।
- **खाद को शक्तियों से करें भरपूर:** जमीन में जैविक खाद का इस्तेमाल करते हैं, तब उस खाद को भी परमात्म शक्तियों से शांति, पवित्रता, ज्ञान के प्रकम्पन से भरपूर करें। संकल्प करें कि यह खाद फसल को निरोगी और सुदृढ़ बनाने में मदद करेगी। फसल के ऊपर छिड़कते समय यह अनुभव करें कि छिड़काव के साथ परमात्म शक्तियां भी फसल पर उतर रही है और सभी कीट भाग रहे हैं और फसल भी निरोगी बन रही है।

शिव ध्वज के साथ परमात्मा की याद में बोवनी करते हुए किसान भाई।

गांव का विकास करना सभी का धर्म

भारत की आत्मा गांवों में बसती है। गांव को उठाना हम सबका धर्म है। गांवों के विकास में ही हम सभी का विकास समाया हुआ है। इसलिए हमारे देश के कृषकों को उचित प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक क्रांति ये पहली क्रांति है जो सारे कल्प में पहली बार इसकी आवश्यकता हुई है। अगर हम सभी आध्यात्मिक क्रांति में अपना योगदान दें तो हम भारत को स्वर्णिम भारत बना सकते हैं। हमारे अंदर संकल्प है, लेकिन दृढ़ता न होने के कारण हमें सफलता नहीं मिलती है। अभी समय है आध्यात्मिक क्रांति का जिसमें हम सभी को अपना सहयोग देना है। ग्रामवासियों को आध्यात्मिक शिक्षा देकर फिर उन्हें यौगिक खेती का प्रशिक्षण भी देना है।

मोहिनी बहन, अध्यक्षा ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

हजारों किसान भाईयों की बदली जिंदगी

आज गांवों से भारतीय संस्कृति नौतिक मूल्य सच्चाई, सफाई, सद्भावना, मैत्रीभाव जीवन से दूर होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप जो गांव कभी गोकुल गांव के नाम से पुकारे जाते थे, जिनके अंदर जाने पर अतिथि देवोभव: के नाम से सत्कार और सम्मान मिलता था, आज उन्ही गांवों की दशा दुर्दशा में बदल गई है। आज देश में धन की कमी नहीं है, कमी है तो केवल जीवन मूल्यों की। जब तक प्रत्येक नागरिक में जीवन मूल्य नहीं होंगे तब तक गांवों का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता है। प्रभाग द्वारा गांवों के नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जिसके माध्यम से आज हजारों किसान जुड़कर निर्व्यसनी और सुखमय जीवन जी रहे हैं। यौगिक खेती से अनेक किसान भाईयों की जिंदगी बदल गई है।

बीके सरला, राष्ट्रीय संयोजिका, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

कृषि वैज्ञानिकों के लिए बन रहा उदाहरण

शाश्वत यौगिक खेती प्रोजेक्ट को सबसे पहले दांतीवाड़ा विश्वविद्यालय में अनुसंधान के लिए जारी किया गया। इस विश्वविद्यालय में कई वर्षों से यौगिक खेती के प्रयोग चल रहे हैं और इसके बहुत सुंदर परिणाम सामने आए हैं। जो कि अनेक कृषि वैज्ञानिकों के लिए उदाहरण बन रहा है। अभी तक बीज बोने से पहले मेडिकल ट्रीटमेंट करते थे। अब हम मेडिटेड सीड (राजयोग मेडिटेशन) की ओर प्रयोग कर रहे हैं। योग-साधना के द्वारा क्या परिवर्तन हो सकता है। पिछले तीन वर्षों से ये प्रयोग चल रहा है। इससे उपज में थोड़ा सुधार आया है। इससे माइक्रोब की संख्या बढ़ी है। आध्यात्मिक क्रांति में आर्थिक विकास भी छुपा हुआ है। क्वांटम फिजिक्स भी अब इस बात को मान रही है। आने वाले समय में हमारे इस प्रयोग की उपयोगिता अवश्य समझी जाएगी।

डॉ. आरसी माहेश्वरी, पूर्व कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, दांतीवाड़ा, गुजरात

यौगिक खेती से बढ़ती फसल की गुणवत्ता

विश्व में 40 प्रतिशत मनुष्यों, पौधों और जानवरों में बीमारी की समस्या पर्यावरण प्रदूषण के कारण है। यदि ईस्टर्न इंडिया में रासायनिक खाद का प्रयोग इसी तरह जारी रहा तो 5-10 वर्षों में यहां की खेती समाप्त हो जाएगी, जैसा की अन्य राज्यों में हो रहा है। नासा के मुताबिक प्रतिदिन 75 ट्रिलियन ऊर्जा धरती को मिल रही है। दशमलव 1 प्रतिशत भी अगर हम उस ऊर्जा को ग्रहण कर लें तो खेती के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रयाप्त होगी। जैविक खेती और यौगिक खेती को अगर जोड़ दिया जाए तो इससे आशा से कहीं ज्यादा अच्छे परिणाम मिलेंगे। अगर हम पेड़-पौधों को सकारात्मक ऊर्जा देते हैं तो इससे सभी पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यौगिक खेती में फसल की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

आरके पाठक, पूर्व निदेशक, सीआईएसएच, लखनऊ

वृत्ति से प्रकृति बदल सकती है

वृत्ति से प्रकृति बदल सकती है और दृष्टि से सृष्टि बदल सकती है। यदि हम स्वयं को ही बदल लेंगे तो यह दुनिया बदल जाएगी। योग में वो ताकत है जो हमारी मानसिकता को बदल सकती है। राजयोग के प्रयोग से दैवी शक्ति आती है। हमारी मानसिकता सही होने से सभी के साथ हमारे संबंध अच्छे बन जाते हैं और प्रकृति की भी भाषा हम समझने लगते हैं। प्रकृति के प्रति हमारा दृष्टिकोण सही नहीं होने के कारण उसका प्रभाव अन्न पर पड़ा है।

डॉ. शरदराव ए.निंबालकर, पूर्व उपकुलपति, पद्मभराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, नागपुर

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए है। आधुनिक युग में आज चैनलों में जहां अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही हैं वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैलन के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकान, रिलायंस, एयरटेल डीटीएच के अलावा केबल टी.वी. पर कहीं भी देखा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल: karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

आपको बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। परमात्मा पिछले 77 वर्षों से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे है। विषय विकारों से ग्रसित, इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने परमात्मा आते है। परमात्मा साकार मनुष्य तन का आधार लेकर हम आत्माओं को स्वयं की सत्य पहचान कराते है। परमात्मा सच्चा गीता ज्ञान देकर राह से भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का रास्ता बताते है। परमपिता परमात्मा ने बताया कि तुम मनुष्यात्माओं का वास्तविक घर परमधाम, निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक है। तुम्हारा वास्तविक घर वहीं है। इस सृष्टि पर तुम आत्माएं अपने ड्रामा अनुसार पार्ट बजाने आती हो। अब फिर मैं तुम्हें वापस ले जाना आया हूं। इसलिए इस अज्ञान निद्रा से जागों और 21 जन्मों के राज्य भाग्य का वर्सा मुझ से लेकर अपना भाग्य बनाने का सुअवसर है। गीता में भी भगवान ने कहा है कि मैं कल्प-कल्प के संगमयुगे आते हूं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता:

प्रकाशक : ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स से मुद्रित।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: **मोबाइल:** 9413384884, 9414156615, 9414193999 **फोन:** 02974-228230, Email: bkmediaprhq@gmail.com